# संगीत में ताल शब्द की परिभाषा एवं व्यापकता

ताल क्या है?

ताल संगीत का प्राण है। जिस प्रकार यदि मानव शरीर में प्राण नहीं हैं तो उस शरीर का क्या महत्व? इसी प्रकार जो संगीत तालहीन है, उसका कोई महत्व नहीं, वह निर्जीव है। ऐसा संगीत देखने–सुनने के योग्य नहीं है, कारण ऐसे तालहीन संगीत से मनुष्य को आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। संगीत में ताल के महत्व को जानने के पूर्व ताल शब्द के विषय में जानना आवश्यक है।

ताल की परिभाषा– संगीत में समय नापने के साधन को ताल कहते हैं। यह विभागों और मात्राओं के समूह से बनता है। दूसरे शब्दों में–जय नापने के साधन को जो मात्राओं का समूह होता है, संगीत–शास्त्र में ताल कहते हैं। ताल लय को प्रकट करने की प्रक्रिया है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि ताल की उत्पत्ति कैसे हुई? इसके सूक्ष्म विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ताल की उत्पत्ति ताल–गति से हुई।

संगीत में ताल की आवश्यकता संगीत को काल–बद्ध कराने के लिए होती है। ताल शब्द की उत्पत्ति ताल धातु से हुई है। तल शब्द का अर्थ है नीचे रहने वाला या धारण करे वाला। जिस प्रकार पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपने ऊपर धारण किए हुए है और जिस प्रकार पैर के नीचे का भाग पदतल कहलाता है तथा शरीर के पूरे भाग को अपने ऊपर धारण किए हुए है, उसी प्रकार ताल संगीत में गायन, वादन और नृत्य को अपने ऊपर धारण किए हुए हैं।

भारत में संगीत विषय पर प्रापत प्राचीनतम ग्रन्थ के रचयिता भरतमुनि के अनुसार– संगीत में काल नापने के साधन को ताल कहते हैं। यह कला, पात और लय से अन्वित होता है, इसके नापने का माध्यम घन वाद्य है। संगीत रत्नाकर में ताल के विषय में कहा गया है कि जिसमें गीत, वाद्य और नृत्य प्रतिष्ठित होते हैं, वह ताल है। प्रतिष्ठित होने का अर्थ है– एक सूत्र में बांधना, व्यवस्थित करना, आधार देना या स्थिरता प्रदान करना आदि। अभिनव गुप्त के अनुसार– ताल स शब्द क्रिया–विशेष के योग से बनती है, जो काल के विभाजक क्रिया रूप और द्रमात्मा हैं। व्याकरण में यह सबसे महत्वपूर्ण शब्द क्रिया है, क्योंकि क्रिया ही ताल या काल है। अमरकोष में काल क्रिया के मापन को ताल कहा गया है। कुछ विद्वानों ने लघु, गुरू, प्लुसेयुक्त सशब्द और निःशब्द क्रिया द्वारा गीत, वाद्य, नृत्य को परिमित करने वाले काल को ताल कहा है। इस सब का एक ही निष्कर्ष निकलता है कि गीत आदि के परिणाम निर्धारक काल या समय ही ताल हैं। संस्कृत–ग्रन्थ संगीतार्णव में ताण्डव (पुरूष) नृत्य से ता तथा लास्य (स्त्री) नृत्य से ल वर्णों के संयोग से ताल शब्द की व्युत्पत्ति दर्शाइ गई है।

ताण्डवस्याद्यवर्णेन लकारो लास्य शब्दशाक्।
यदा संगच्छते लोके तदा तालः प्रकीर्तितः।।

संगीत–दर्पण में ताकार से शंकर या शिव और लकार से पार्वती या शक्ति–दोनों का योग ताल कहा गया है–

ताकारों शंकरः प्रोक्तो लकारे पार्वती स्मृता।
शिवशक्ति समायोगस्ताल नामाभिधीयते।।

रागार्णव ग्रन्थ में उभयकरतलाघातोत्पन्न ध्वनि को ताल ग्रहण करने की क्रिया कहा है। ग्रन्थकार ने तल शब्द के साथ अन् प्रत्यय द्वारा ताल शब्द की व्युत्पत्ति निम्नांकित श्लोक में प्रतिपादित की है–

हस्तद्वयस्य संयोगे वियोगे चापि वर्तत।
व्याप्तिमान् यो दशप्राणैः स कालस्तालसंज्ञकः।।

पं0 अमर सिंह के अमरकोष में ताल की परिभाषा की गई है– "ताल काल क्रियामन" अर्थात्– काल क्रिया के मान (नाप) को ही ताल कहते हैं।

पार्श्वदेव ने ताल की परिभाषा इस प्रकार की है– प्रतिष्ठार्थक तल धातु से ताल शब्द की निष्पत्ति हुई है, वह (ताल) क्रिया के द्वारा परिकल्पित कालमान है।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि के अनुसार–काल (क्रिया) के निर्धारक काल या समय का नाम ताल है।

दत्तिल ने ताल को इस प्रकार परिभाषित किया है– ताल से साम्य होता है, क्योंकि लय ताल का ही मुख्य अंग है। साम्य भाव हो जाने से वह सिद्ध समझा जाता है। ताल में कला, पात तथा पादभाग जानना आवश्यक है।

डॉ0 धर्मावती श्रीवास्तव के अनुसार– काल की नियमित गति जो नियमों से बद्ध होती है, वह ताल कहलाती है। ताल हाथ से और वाद्यों के माध्यम से भी दी जाती है। इसका गायन, वादन तथा नृत्य– इन तीनों में समान महत्वपूर्ण स्थान है।

संगीत में ताल शब्द का प्रयोग अनेक अर्थो में किया जाता है। जैसे–

(क) वाद्य के रूप में– अर्थात् ताल एक प्रकार का घनवाद्य होता है जिसे कास्यताल या ताल कहते हैं।

(ख) क्रिया के रूप में– अर्थात् हाथ से ताल देने की क्रिया को ताल

कहते हैं।
(ग) क्रिया–विशेष के रूप में– अर्थात् क्रियाओं में होनेवाली सशब्द नामक क्रिया ताल कहलाती है।
(घ) विशिष्ट कालखण्ड के रूप में– अर्थात् क्रियाओं के विशिष्ट समूह के आवर्तन से बनने वाला विशेष कालखण्ड भी ताल कहलाता है, जैसे–तीन ताल, एकताल आदि।

प्राचीन काल से तालवाद्य ताल पर आधृत हैं और तभी से ताल–वाद्यों में घन–वाद्यों और अवनद्ध–वाद्यों का प्रयोग प्रचलित है। प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक अवनद्ध–वाद्यों पर ताल को प्रदर्शित संगीत में रंजकता प्राप्त होती चली आ रही है,और ताल गायन–वादन– नृत्य को स्थिरता तथा प्रतिष्ठा प्रदान करती रही है। गायन–वादन–नृत्य से यदि ताल को निकाल दें तो उनका कलेवर प्राणशून्य जान पड़ेगा। तालहीन गायन गाना न होकर रोना है। गायक स्वर–वाद्य में लीन हो या स्वर–वाद्य गायक–ताल में लीन हो, ये दोनों ताल में निमग्न हों और ताल उनमें निमग्न हो। ताल व संगीत का स्वर–व्यंजन जैसा जोड़ा है– चाहे वह गायन हो या फिर नृत्य हो। मानव का जीवन एक संगीत है और संगीत का जीवन ताल है।

नृत्य में ताल का महत्व अत्यधिक होता है। नृत्यकार के घुँघरू की आवाज नृत्य के बोलों के अनुरूप ही होनी चाहिए। नृत्यकार की तरह ही एक वादक भी ताल में तन्मय होकर झूम उठता है। सम आते ही, उसके शरीर के समस्त अंग–प्रत्यंग जैसे सम का स्वागत करने हेतु एक ओर झुक जाते हैं, यह सब ताल का ही कमाल है।
संगीत में ताल की व्यापकता– ताल का विषय बहुत व्यापक व गम्भीर है। स्वर सीमित हो सकता है, किन्तु ताल असीमित है, क्योंकि ताल के मान को सहस्रों भागों में विभाजित करके दिखाया जा सकता है। ताल काल–मान को हक हम ठीक उसी प्रकार से निर्धारित कर सकते हैं, जिस प्रकार मिनट बताने के लिए सेकंड, घंटा बताने के लिए मिनट, दिन–रात बताने के लिए घंटे और वर्ष बताने के लिए मास निर्धारित हैं।

भारतीय संगीत में लय–निर्वाह की सबसे प्राचीन प्रणाली हाथ से ताल देने की रही होगी, और पदचाप द्वारा लय–निर्वाह के प्रयास हुए होंगे। केवल भारत ही नहीं, लयात्मकता के क्षेत्र में सभी देशों में यही क्रम रहा है। अन्य देशों का संगीत केवल लय साम्यों की विविधता में ही सीमित रह गया है, किन्तु भारतीय संगीत की विभिन्न धाराओं में इसी लयात्मकता का ताल–शास्त्र के रूप में जो व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विकास हुआ, उसके दृष्टान्त अन्य देशीय लय–स्वरूपों में दृष्टिकोचर नहीं होते हैं।

संगीत में ताल की आवश्यकता निम्नांकित आधारों पर महसूस होती है :
**1. संगीत में समय–बन्धन**–अति सर्वत्र वर्जयेत् के अनुसार बहुत अधिक सुन्दर या मधुर वस्तु भी अति होने पर नीरस प्रतीत होने लगती है। जिस प्रकार अच्छा भोजन अधिक मात्रा में खाने से हमारे शरीर को हानि पहुँचाता है, उसी प्रकार सुमधुर, स्वरबद्ध अनिबद्ध संगीत भी निरन्तर सुनने से वह रसिक के मन में वितृष्णा भर देता है। यह वितृष्णा श्रोता के मन में उत्पन्न न हो पाये इसीलिए समय का या लयात्मक ध्वनि का समावेश आवश्यक हो जाता है। अखण्ड समय तक, बिना लयबद्धता के तथा तालबद्धता के संगीत का आस्वादन कठिन हो जाता है। तालबद्ध संगीत स्फूर्तिदायक व मनोरंजन होता है। श्रोतागण ताल के निश्चित समय खण्डों की आवृत्ति में विभोरह ोकर अत्यन्त सुख (आनन्द) का अनुभव करते हैं।

2. **ताल द्वारा सौन्दर्यपूर्ण चलन**–शैलियों का विकास– संगीत में ताल द्वारा ही सौन्दर्यपूर्ण व चमत्कारपूर्ण चलन–शैलियों का विकास होता है ताल द्वारा ही प्रतिभा सम्पन्न कलाकारों की चलन–शैलियों का सृजन व विकास होता है। ताल द्वारा विभिन्न लयकारी युक्त चलन–शैली के मौलिक तत्व से समन्वित होकर ही कलाकारों की कला दुगुनी–चौगुनी प्रीावशाली हो जाती हैं कुशल गायकों के विशिष्ट गतियुक्त गीत–प्रकारों के साथ, ताल की चलन–शैली का तालमेल यदि ठीक से बैठ जाता है, तो वह उस गीत से उत्पन्न भावों व गम्भीरता आदि से युक्त चलन–शैली में चार चांद लगा देता है। इन्हीं चलन–शैलियों के कारण पुराने गाने भी मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। इस प्रकार सौन्दर्यपूर्ण चलन–शैलियों में ताल–संगीत के सुख और आनन्द को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा देता है।

3. **संगीत में सांगीतिक संयम और ताल**– संगीत में ताल द्वारा ही संयम रखा जा सकता है संयम द्वारा ही कला में सुन्दर भावनाओं का प्रदर्शन सम्भव होता है। प्राचीन काल में ही संगीत की तीनों कलाओं–गायन–वादन व नृत्य में संयम और सन्तुलन रखा गया है। इसी कारण संगीत का निरन्तर विकास होता रहा है, और इन तीनों कलाओं में ताल द्वारा ही संयम तथा सन्तुलन रखा जाता है। विभिन्न लयकारियों में गाए जाने वाले गीत में लय को ताल द्वारा ही संयम में रखा जा सकता है। गायन–वादन–नृत्य में लय को ताल द्वारा ही नियन्त्रित किया जाता है। इसी से उसकी भावाभिव्यक्ति और रसोत्पत्ति निरन्तर बनी रहती है। संगीत में प्रारम्भ से अन्त तक, कला का प्रदर्शन ताल के संयम द्वारा ही मौलिक व शाश्वत बना रहता है। इसीलिए संगीत में संयम की रक्षा के लिए ताल का महत्वपूर्ण स्थान है।

4. **ताल द्वारा संगीत का संरक्षण**– अनिबद्ध संगीत कच्चे आम की तरह है, और निबद्ध संगीत अचार की तरह। जिस प्रकार हम कच्चे आम को अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रख पतो हैं, सी प्रकार अनिबद्ध संगीत का प्रदर्शन करने के साथ ही उसका लोप हो जाता है। अचार के रूप में जिस प्रकार आम को अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, उसी प्रकार तालयुक्त संगीत शिष्य–परम्परा में गुरूमुख द्वारा अपने निश्चित स्वरूप के कारण पीढ़ियों तक चलता रहता है और देश की संस्कृति के कोष में स्थायी सम्पत्ति बन जाता है। संगीत का ताल में निबद्ध होकर रहने से वह अधिक समय तक संरक्षित रहता है।

5. **ताल द्वारा संगीत में रसनिष्पत्ति**– संगीत में ताल के बिना रसनिष्पत्ति सम्भव नहीं है। संगीत में ताल गायक की प्रस्तुति के

अनुसार हो तो उसमें रसनिष्पत्ति सम्भव हो जाती है। शब्दों के स्पष्टीकरण के अभाव में ताल और लय द्वारा रसनिष्पत्ति प्राप्त हो जाती है। रौद्र, वीर, श्रृंगार व शान्त रस के अनुसार गीतों में ताल की लय भी उसके अनुसार होनी चाहिए। ख्याल, ठुमरी, भजन, ध्रुवपद व तराना आदि गीत–प्रकारों के साथ ताल और लय की संगत निष्पत्ति में सहायक होती है। अनिबद्ध संगीत केवल करूण रस प्रदर्शित करने में समर्थ होता है और वह भी कोमल स्वरों की संगति में। शेष सभी रस ताल के विभिन्न गति–भेदों के बिना सम्भव नहीं है। जैसे– ध्रुवपद गायन गम्भीर प्रकृति का गायन है और इसके साथ, विलम्बित लय की चौताल में संगत होती है। गायक के प्रस्तुतीकरण के अनुसार गीतभेद का वादन रसनिष्पत्ति में सहायक होता है। अवनद्ध वाद्यों पर ताल–वादन मध्यम या द्रुत लय में तथा खुले व बन्द आघातों से भिन्न–भिन्न रस की निष्पत्ति सम्भव होती है।

6. **ताल द्वारा संगीत का मूल्यांकन–** ताल संगीत के मूल्यांकन करने का एक मुख्य साधन हैं संगीत एक बार बेसुरा हो सकता है किन्तु बेताला नहीं। स्वर से किंचित हटने पर भी यदि ताल की लय और गीत की लय में समन्वय स्थापित हो तो संगीत में स्वर की कमी छिप जाती है। ताल की प्रतिभा के बल पर ही संगीतकार के संगीत का मूल्यांकन समभव हो पाता है। ऐसा देखा जाता है कि अच्छेसे अच्छे संगीतकार को यदि ताल–वादक की उचित संगतप्राप्त नहीं होती है तो उसका कार्यक्रम असफल हो जाता है। गायक, वादक तथा नर्तक के कलात्मक मूल्य की अनुभूति ताल में बोलों के निकास से सम्भव होती है। एक साधारण कलाकार भी उत्तम ताल–संगति के कारण अपने आपको अधिक श्रेष्ठ प्रमाणित करने में समर्थ होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही ताल का महत्व और उसकी आवश्यकता अनुभव की जाती रही है। संगीत चाहे शास्त्रीय संगीत हो या सुगम संगत हो या लोक–संगीत हे, उसमें मात्राखण्डों के अनुसार लयकारियों में ताल–वादन आवश्यक है, जिससे गायन का सौनदर्य बना रहे उसमें रसनिष्पत्ति हो, वह निरन्तर अच्छा लगे और वह मनोरंजक बन सके।

वास्तव में संगीत का छन्द ताल हैं यह केवल भारतीय संगीत ही नहीं, बल्कि विश्व के संगीत के क्रमिक ऐतिहासिक विकास में निहित है। संगीत में ताल के महत्व व आवश्यकता को समझने से ज्ञात होता है कि ताल के अभाव में संगीत की तीनों कलाएँ बेजान–सी प्रतीत होती हैं। किसी भी संगतज्ञ तथा नृत्यकार की योग्यता को परखने के लिए ताल एक महत्वपूर्ण साधन है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

27. संगीत में ताल वाद्यों की पयोगिता– डा0 चित्रा गुणज्ञत, पृ0 23
28, वही, पृ0 24
29 भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन– डॉ0 अरूण कुमार सेन, पृ0 47
30 वही, पृ0 60
31– वही पृ0 62

**डा0 प्रवीण सैनी**
असि0प्रो0 संगीत वादन (तबला)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालिज,
मुरादाबाद।